काव्य हेतु

★ **भूमिका** :- काव्य या साहित्य के हेतु का सीधा अर्थ है - काव्य-निर्माण का कारण। इसके अन्तर्गत उन तत्वों का विश्लेषण किया जाता है, जिनके कारण काव्य की रचना होती है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि साहित्य (काव्य) के ~~हेतु~~ हेतु में रचनाकार द्वारा सृजन की प्रक्रिया और के कारणों पर विचार किया जाता है। भारतीय काव्यशास्त्र में इस तत्व का अत्यन्त वैज्ञानिक विवेचन हुआ है कि कवि में वह कौनसी शक्ति निहित है, जिसके कारण वह सामान्य मानव होकर भी विलक्षण काव्य-रचना करता है या असामान्य अर्थ सम्पन्न करता है।

★ **संस्कृत आचार्यों के अनुसार काव्य-हेतु** :- विभिन्न संस्कृत के आचार्यों ने काव्य-हेतुओं का वर्णन किया है परन्तु उनमें मतैक्य नहीं

SHIVA A+ Designer Sheets

दिखाई देता। यहाँ संक्षेप में उनके मत प्रस्तुत किये जा रहे हैं :-

1. **भामह** :- 'काव्यालंकार' में भामह ने स्वीकार किया है कि गुरु के उपदेश से जड़-बुद्धि भी शास्त्रों का अध्ययन करने में समर्थ हो सकता है, पर, काव्य तो किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति में यदा-कदा ही स्फुटित होता है। वे यह स्वीकार करते हैं कि काव्य-रचना के लिए व्याकरण, छंद, कोश, अर्थ, इतिहास, लोक-व्यवहार, तर्कशास्त्र तथा कलाओं का मनन करना चाहिये। उन्होंने काव्य हेतु के तीन साधन माने हैं - प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास। पर वे प्रतिभा को महत्वपूर्ण और अनिवार्य तत्व स्वीकार करते हैं।

2. **दण्डी** :- प्रतिभा, अध्ययन तथा अभ्यास तीनों के सम्मिलित रूप को ही दण्डी काव्य हेतु स्वीकार करते हैं। उन्होंने 'काव्यादर्श' में कहा है :-

"नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहुनिर्मलम्।
आनन्दश्चाभियोगोऽस्याः कारणं काव्यसम्पदः॥"

NOTES

Serial No. Date

दिखाई देता। यहाँ संक्षेप में उनके मत प्रस्तुत किये जा रहे हैं :-

1. **भामह** :- 'काव्यालंकार' में भामह ने स्वीकार किया है कि गुरु के उपदेश से जड़-बुद्धि भी शास्त्रों का अध्ययन करने में समर्थ हो सकता है, पर, काव्य तो किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति में यदा-कदा ही स्फुटित होता है। वे यह स्वीकार करते हैं कि काव्य-रचना के लिए व्याकरण, छंद, कोश, अर्थ, इतिहास, लोक-व्यवहार, तर्कशास्त्र तथा कलाओं का मनन करना चाहिये। उन्होंने काव्य हेतु के तीन साधन माने हैं - प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास। पर वे प्रतिभा को महत्वपूर्ण और अनिवार्य तत्व स्वीकार करते हैं।

2. **दण्डी** :- प्रतिभा, अध्ययन तथा अभ्यास, तीनों के सम्मिलित रूप को ही दण्डी काव्य हेतु स्वीकार करते हैं। उन्होंने 'काव्यादर्श' में कहा है :-

"नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहुनिर्मलम्।
आनन्दश्चाभियोगोऽस्या: कारणं काव्य सम्पद:॥"

SHIVA A+ Designer Sheets

NOTES Date

इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि प्रतिभा के अभ्यास के कारण सरस्वती की सेवकों पर कृपा रहती है। डॉ. राजवंश सहाय हीरा (भारतीय आलोचनाशास्त्र) के अनुसार दण्डी ने दो प्रकार की काव्य-कोटियाँ स्वीकार कीं :-

(क) **उत्तम** :- इसमें प्रतिभा, अध्ययन की अनिवार्यता स्वीकार की है।

(ख) **सामान्य** :- यह काव्य-प्रतिभा के अभाव में भी अध्ययन और अभ्यास द्वारा निर्मित हो सकता है।

रुद्रट :- अपने ग्रन्थ 'काव्यालंकार' में रुद्रट ने प्रतिभा, व्युत्पत्ति तथा अभ्यास तीनों को ही काव्य का हेतु स्वीकार किया है। उन्होंने प्रतिभा दो प्रकार की मानी है: पहली सहजा जो कवि में जन्मजात होती है और काव्य-निर्माण का मूल कारण है, दूसरी उत्पाद्य, यह अध्ययन से उत्पन्न होती है अथवा व्युत्पत्ति द्वारा उत्पन्न होती है। यह सहजा प्रतिभा को संस्कारित और परिष्कृत करती है। अतः रुद्रट ने सहजा प्रतिभा काव्य का हेतु मानकर उत्पाद्य को

SHIVA A+ Designer Sheets

Serial No. **NOTES** Date

उसके संस्कार का कारण माना है। उन्होंने व्युत्पत्ति को छंद, कला, व्याकरण आदि का ज्ञान बताया है और यह भी कहा है कि सुकवि के निकट रहकर काव्याभ्यास करने से भी सुन्दर रचना संभव है।

4. **राजशेखर** :- ये प्रतिभा और व्युत्पत्ति दोनों को काव्य का श्रेयस्कर हेतु मानते हैं :-

"प्रतिभाव्युत्पत्तिमिश्र : समवेते श्रेयस्यौ इति॥"

राजशेखर के अनुसार प्रतिभा तथा व्युत्पत्ति से आपूर्ण होने पर ही कवि कवित्व प्राप्त करता है। उन्होंने बुद्धि के तीन प्रकार बताये हैं :-

(क) **स्मृति** :- पूर्व विषयों का स्मरण करने वाली।

(ख) **मति** :- वर्तमान विषयों का मनन करने वाली।

(ग) **प्रज्ञा** :- भविष्यदर्शिनी या ~~दीर्घदी~~ दीर्घदर्शिनी। वे तीनों प्रकार की बुद्धि को कवि के लिए उपयोगी एवं आवश्यक मानते हैं। उनके अनुसार प्रतिभा भी दो प्रकार की होती है :-

SHIVA A+ Designer

Serial No. **NOTES** Date

★ **कारयित्री** :- यह जन्मजात होती है। यह भी तीन प्रकार की होती है- सहजा, आहार्या और औपदेशिकी। ~~जन्म जन्मज~~ जन्मजात प्रतिभा, सहजा, अध्ययन से उत्पन्न आहार्या औपदेशिक कही जाती है।

★ **भावयित्री** :- इसका सम्बन्ध सहृदय और आलोचक से माना जाता है।

5. **मम्मट** :- इन्होंने 'काव्यप्रकाश' में लिखा है :-

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥

अर्थात् कवि में रहने वाली स्वाभाविक प्रतिभारूपी शक्ति, लोक व्यवहार, शास्त्र तथा काव्यादि के अध्ययन से निपुणता पाकर गुरु की ~~शिक्षा~~ शिक्षा के अनुसार अभ्यास से अधिक निपुण होकर काव्य का कारण बनती है। मम्मट शक्ति को काव्य का बीज संस्कार मानते हैं, जिसके अभाव में काव्य सृष्टि ~~सम्~~ सम्भव नहीं।

★ **हिंदी विचारकों के अनुसार काव्य-हेतु** :- काव्य-हेतु के सन्दर्भ में हिंदी के विद्वानों ने अपने विचार

SHIVA A+ Designer Sheets

इस प्रकार किये हैं :-

1. **भिखारीदास** :- ये तीन काव्यहेतु मानते हैं- शक्ति या प्रतिभा, सुकवियों द्वारा, काव्य-रीति का अध्ययन और लोकानुभाव। वे शक्ति को जन्मजात मानते हैं :-

सक्ति कवित्त, बनाइवे की, जिन जन्म नछत्र
में दीनी विधाता।

2. **आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी** :- कवि के लिए जिस बात की सबसे अधिक जरूरत होती है, वह प्रतिभा है। वे व्युत्पत्ति और अभ्यास को महत्व देते हुए कहते हैं :- "जिस कवि को मनोविकारों और प्राकृतिक बातों का यथेष्ट ज्ञान नहीं होता, वह कदापि अच्छा कवि नहीं हो सकता।"

3. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** :- शुक्लजी प्रतिभा (रस-मीमांसा) को ही काव्य का प्रमुख हेतु मानते हुए व्युत्पत्ति और अभ्यास का भी महत्त्व स्वीकार करते हैं।

Serial No. **NOTES** Date

4. **महादेवी वर्मा** :- ये भी काव्य-सृजन हेतु प्रतिभा और व्युत्पत्ति की महत्ता स्वीकार करती हुई अभ्यास मात्र को महत्व नहीं देतीं- "साहित्य-सृजन केवल रुचि, इच्छा या विवशता का परिणाम नहीं है, क्योंकि उसके लिए एक विशेष प्रतिभा और उसे संभव करने वाले मानसिक गठन की आवश्यकता होती है।

5. **रामधारी सिंह 'दिनकर'** :- ये प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास को सामूहिक रूप से काव्य-सृजन का हेतु स्वीकार करते हैं- "प्रेरणा को ठीक से ग्रहण करने और उसे ठीक-ठीक लिखने के अभ्यास और प्रयास को मैं कविता-साधन कहता हूँ।"

6. **डॉ. नगेन्द्र** :- ये भी प्रतिभा को सर्वाधिक महत्व देते हैं। ये प्रतिभा को चेतना मानते हैं, जो अनुभूति, चिन्तन, विचार, संकल्प तथा कल्पना आदि क्रियाएँ सम्पादित करती है।

SHIVA A+ Designer

Serial No. NOTES Date

* **पाश्चात्य विचारकों के अनुसार काव्य-हेतु** :- काव्य-हेतु के सन्दर्भ में पाश्चात्य विद्वानों के विचार इस प्रकार हैं :-

1. **प्लेटो** :- ये प्रेरणा को ही महत्व देते हैं, क्योंकि इनके अनुसार प्रेरणा के अभाव में कोई स्फुरण सम्भव नहीं है। "......
There is no Invention in him until he has B been inspired."

2. **अरस्तु** :- ये प्रतिभा के साथ सूझ-बूझ को भी महत्व देते हैं। इनके अनुसार कवि-प्रतिभा जन्मजात होती है-
"A man of born Talent."

3. **बेन जॉनसन** :- ये तीन विशेषताएँ स्वीकार करते हैं :- (क) प्रतिभा :- जिसे वे प्रकृति-प्रदत्त (Natural endownment) मानते हैं, (ख) व्युत्पत्ति :- (लोकज्ञान) (Createness of Study and multiplicity

SHIVA A+ Designer Sheets

NOTES

Serial No. Date

~~of~~ Reading), तथा (ग) अभ्यास :- इस पर उन्होंने विशेष बल दिया है।

4. **होरेस** :- ये प्रतिभा के साथ अभ्यास को महत्व देते हैं- "For ~~my~~ My Part I fail to see the use of Study without wit or of wit without training."

5. **टी. एस. इलियट** :- इनके अनुसार महान् रचना या महान् आलोचना उसी समय जन्म ले पाती है, जब तत्व विद्यमान हों- प्रौढ़ सभ्यता, प्रौढ़ - भाषा एवं संस्कृति तथा प्रौढ़ कलाकार। ये तीनों तत्व एक-दूसरे से इतने जुड़े हुए हैं कि ~~उ~~ इन्हें अलग - अलग करके नहीं देखा जा सकता। प्रौढ़ता से ~~स्पष्ट~~ तात्पर्य अभ्यास को ही स्वीकार करता है।

★ **निष्कर्ष** :- संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी तीनों ही भाषाओं के विचारकों ने काव्य के

SHIVA A+ Designer Sheets

Serial No.

NOTES

Date

प्रमुख तीन हेतु स्वीकार किये हैं :- प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास। यह भी सभी ने स्वीकार किया है कि प्रतिभा इनमें सर्वोपरि है, परन्तु अभ्यास और व्युत्पत्ति के सहयोग से प्रतिभा में भी निखार आ जाता है।